

समय का चंदन और जीवन की सुगंध



जीवन में अनेक बार ऐसा होता है कि जो वस्तु हमारे पास सबसे अधिक मूल्यवान होती है, उसी का मूल्य हम सबसे कम समझते हैं। जब तक उसकी वास्तविक पहचान होती है, तब तक बहुत कुछ हाथ से निकल चुका होता है। इतिहास गवाह है कि अज्ञान केवल ज्ञान का अभाव नहीं, बल्कि अनमोल अवसरों की हानि का कारण भी बन जाता है।

ये सुंदर कहानी इस सत्य को अत्यंत सहजता से समझाती है— एक राजा वन में मार्ग भूल गया। संध्या का समय था। उसे एक वनवासी की छोटी-सी कुटिया दिखाई दी। वनवासी ने बिना किसी परिचय के उसे अतिथि मानकर प्रेमपूर्वक भोजन कराया, जल पिलाया और प्रातः सुरक्षित मार्ग तक पहुँचा दिया। उसकी निःस्वार्थ सेवा से प्रसन्न होकर राजा ने विदा देते समय उसे उपहार में चंदन का एक उपवन भेंट कर दिया।

वनवासी अत्यंत प्रसन्न हुआ, किंतु वह चंदन के वास्तविक मूल्य से अनभिज्ञ था। उसने चंदन के वृक्ष काटने आरंभ कर दिए और उनकी लकड़ियों का कोयला बनाकर बेचने लगा। परिवार का निर्वाह होता रहा और उसे बड़ी लगा कि वह उपवन उसके लिए पर्याप्त लाभदायक है।

समय बीतता गया। एक दिन मार्ग में एक चंदन व्यापारी मिला। उसने चंदन के एक छोटे से लट्टे का मूल्य स्वर्ण मुद्राओं में दिया। उसी क्षण वनवासी की आँखें खुलीं। उसे ज्ञात हुआ कि वह जिस अमूल्य संपदा को वर्षों से कोयले में बदलता रहा, उसका वास्तविक मूल्य तो अकल्पनीय था। परंतु तब तक पूरा चंदन वन काटकर समाप्त कर चुका था। अब उसके पास केवल पश्चात्ताप था।

क्या यह केवल एक वनवासी की कहानी है? नहीं। यह हमारे अपने जीवन का भी दर्पण है।

परमात्मा ने हमें मनुष्य जीवन दिया - यह स्वयं में एक अनुपम वरदान है। फिर उससे भी बड़ा सौभाग्य तब मिला, जब स्वयं शिव बाबा ने हमें खोजा। उन्होंने आत्मा की पहचान कराई, जीवन का उद्देश्य बताया, दुःखों का कारण समझाया और राजयोग के माध्यम से सर्वशक्तियों का खजाना हमारे सामने खोल दिया। उन्होंने बताया कि यह वही संगमयुग है जो पूरे कल्प में केवल एक बार आता है - जब साधारण मनुष्य देवतुल्य बनने की यात्रा पर अग्रसर होता है।

परंतु प्रश्न यह है कि क्या हम इस ईश्वरीय जन्म के वास्तविक मूल्य को पहचान रहे हैं?

बाबा बार-बार स्मृति दिलाते हैं - "संगमयुग का एक-एक सेकंड वर्षों से भी अधिक मूल्यवान है।" यह समय केवल स्वयं को बदलने का नहीं, बल्कि विश्व परिवर्तन में निमिष बनने का समय है। यही वह घड़ी है, जब एक संकल्प भी भाग्य की रेखाएँ बदल सकता है।

यदि इस स्वर्णिम काल को हमने साधारण समझकर व्यतीत कर दिया, तो अंत में वही स्थिति होगी जो उस वनवासी की हुई। तब आत्मा अनुभव करेगी - परमात्मा ने तो सर्वशक्तियों से सम्पन्न बना दिया था; मैं स्वयं ही उनका पूरा उपयोग नहीं कर पाया।

ब्राह्मण जीवन केवल अपना कल्याण करने का मार्ग नहीं है। यह तो विश्वकल्याण का संकल्प है। हमारे विचारों से किसी को शांति मिले, हमारी वाणी से किसी के मन में आशा जागे, हमारे व्यवहार से किसी का दुःख हल्का हो और हमारी सेवा से कोई आत्मा परमात्मा तक पहुँच जाए - यही ईश्वरीय जीवन की सार्थकता है।

चंदन की सबसे बड़ी विशेषता उसका मूल्य नहीं, उसकी सुगंध है। वह स्वयं भी महकता है और अपने संपर्क में आने वाली प्रत्येक वस्तु को भी सुगंधित कर देता है। ठीक इसी प्रकार ब्राह्मण जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं महान बनना नहीं, बल्कि अपने गुणों, योगबल और सेवा से विश्व को सुगंधित करना है।

आइए, हम स्वयं से एक प्रश्न पूछें - क्या मैं अपने ईश्वरीय जन्म को चंदन की तरह सुगंधित बना रहा हूँ, या अनजाने में उसे कोयले की तरह साधारण बना रहा हूँ?

समय अभी हमारे हाथ में है। यही पुरुषार्थ का समय है, यही सेवा का समय है, और यही भाग्य निर्माण का समय है। आइए, इस अमूल्य संगमयुग को पहचानें, अपने जीवन को गुणों की सुगंध से भर दें और परमात्मा के उस विश्वास को सार्थक करें, जिसके कारण उन्होंने हमें इस महान कार्य के निमित्त बनाया है।

प्रश्न:- अशरीरी, फरिश्ता और बीजरूप अवस्था में क्या अन्तर है? इन अवस्थाओं का अनुभव कैसे कर सकते हैं?

उत्तर:- सबसे पॉवरफुल और फस्ट स्टेज है बीजरूप बनना। बीजरूप अर्थात् जैसे वृक्ष का बीज होता है, सारे वृक्ष में टाल-टालियाँ, फल-फूल की ताकत अपनी-अपनी होती लेकिन बीज में सब शक्तियाँ इक्की और मजबूत रूप में होती हैं। ऐसे ही जब हमारी बीजरूप स्टेज होती है, उसमें दूसरी सब स्थितियाँ लाइट हाउस, माइट हाउस, सर्वशक्ति सम्पन्न स्टेज या फरिश्तापन वा रुहरिहान की स्टेज, सब बीजरूप स्थिति में समाई हुई है। जिस समय हम बीजरूप स्थिति में स्थित होते हैं उस समय सर्वशक्तियाँ, सर्वगुण, सर्वसंबंध सबका रस हमारे में भरा होता है। इमर्ज रूप में नहीं होता। इमर्ज रूप में तब हो जब कर्म या



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

विदेशी भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्न... दादी जी के शब्दों में उत्तर

वाणी में आये। रुहरिहान में संकल्प द्वारा बाबा से बातचीत करते हैं। बीजरूप स्टेज में सर्वशक्तियों का सार है। सर्व स्थितियों का सार रूप जो है वह बीजरूप है। बीजरूप स्थिति में हम यह नहीं कह सकते कि इस स्थिति की अनुभूति कम है। उस समय फीलिंग आएगी जैसे सर्व प्राप्ति का स्वरूप है। सबकुछ बीजरूप स्थिति में समाया हुआ है।

अशरीरी स्टेज अर्थात् शरीर के भान से परे। शरीर का भान अपने तरफ ने खींचे। लेकिन अशरीरी स्थिति के बाद ही हम बीजरूप स्थिति व फरिश्ता-पन की स्थिति का अनुभव कर सकते हैं। अशरीरी बने तो फरिश्ता बनकर काम-काज करते कर्मयोगी रहेंगे। कर्म का बंधन है तो न चाहते भी वह अपनी तरफ खींचेगा। तो बंधन माना फैसला, परवश हो जाना।

लेकिन कर्मयोगी बनकर कर्म के संबंध में आना यह है ब्राह्मण जीवन। जब कर्मक्षेत्र पर हैं, कर्मोन्मुखों का आधार लिया तो कर्म के बंधन से अतीत होंगे, कर्म से नहीं। अशरीरी होकर हर कर्म में आयेगे। फरिश्ता रूप में कर्म करते हर कर्म से न्यारे रहेंगे। फरिश्ता अर्थात् जिसका देह और देह के संबंध व पदार्थों से रिश्ता न हो। तो हम अशरीरी बनकर शरीर के आकर्षण से परे होकर जो कर्म करते हैं वही फरिश्ता स्टेज है। फरिश्ता माना बंधन से परे। फरिश्ते को लाइट की काया है। तो फरिश्ता स्टेज में हड्डी-मांस के शरीर का भान नहीं होता है। हम इससे न्यारे, डबल लाइट होते हैं। अगर हम अशरीरी होकर बीजरूप स्थिति में स्थित होते हैं तो लगता है जैसे कि बाबा के बिल्कुल समीप परमधाम में ऊँची से ऊँची स्थिति, ऊँचे स्थान से बाबा के साथ लाइट-माइट की किरणें

सूर्य के मुआफिक चारों ओर फैला रहे हैं। बीजरूप स्टेज जैसे ऊँचे से ऊँची प्वाइंट है। बाबा के समीप समान हैं, उसमें सब रस भरे हुए हैं। बीजरूप स्टेज ज्यादा टाइम नहीं रहती है, थोड़ा टाइम रहती है फिर फरिश्ता रूप में या मनन में आ जाएंगे। बीजरूप स्टेज पॉवरफुल बाप समान स्टेज है उसमें इतनी लाइट-माइट होती जोकि विक्रम भस्म हो जाते हैं। यह थोड़े समय की स्टेज भी बहुत मदद देने वाली है। एक-दो घंटे भी उस स्टेज का अभ्यास करो तो ऑटोमैटिक वह स्टेज अपनी तरफ खींचती रहेगी। उसकी मदद से जैसे उपग्रह होते जाएंगे। कर्म करते भी कयवनहार बाबा याद रहेगा। लेकिन बीजरूप व फरिश्ता रूप स्टेज का अनुभव करने के लिए अशरीरी तो बनना ही पड़ेगा।

कई कहते हैं हमें योग का अथवा बाबा से सर्व संबंधों का अनुभव नहीं होता या मैं बाबा की शक्ति का स्वयं में अनुभव नहीं करती - मैं कमजोर हूँ तो इन सबका कारण है कि बाबा से सच्चे दिल की लगन नहीं है। बाबा से लाइन क्लियर नहीं है अथवा बाबा जो है जैसा है मैंने पहचाना तो मेरे में इतनी लगन व शक्ति भी होगी। तो पहले अपना कनेक्शन देखना है कि मेरे में कोई देह अभिमान तो नहीं है? मेरे में किसी के संगदोष का असर तो नहीं होता है? मेरे में किसी भी बात के कारण कभी संशय उत्पन्न तो नहीं होता? ऐसे अनेक बातों से खुद को चेक करना है।

हमारा फाइनेल पेपर है स्मृतिलब्ध नष्टोमोहा लेकिन इस पेपर में वही पास होता है जो सच्ची, साफ दिल वाला है। जिसकी नजरों में सदा एक परमात्मा बाप ही दिखाई पड़ता है। कई बार यह जो आता कि यह मेरे सम्बन्धी, मेरी प्रॉपर्टी, मेरी योग्यता यह मैं-मेरा भी बहुत

प्रकार से मदद मिलती है। बाबा के यह महावाक्य कि बच्चे सच्ची दिल पर साहेब राजी, यह हमें हर कदम पर अनुभव हो। अनुभव होता है तो कनेक्शन ठीक है।

अनुभव नहीं होता तो जरूर कहाँ मेरी बुद्धि के अन्दर कांटा है। जब बुद्धि क्लियर नहीं होगी तो कहाँ इधर-उधर जरूर भटकेंगी। तो चेक करना है मेरी बुद्धि कहाँ भटकती तो नहीं है?

ऐसे जो स्मृति स्वरूप है वही नष्टोमोहा बनते हैं। उसी का नाम है सच्चे टस्टी। तो चेक करो कि हम सब पक्के टस्टी हैं? जो स्मृतिलब्ध

होगा वह वैभवों के आधार पर स्थिति को नहीं खड़ा करेगा, वैभवों के आधार पर सेवा करे, वैभवों के आधार पर मैं अपनी जीवन को निभाऊँ, वैभवों के आधार पर मैं त्यागी रहूँ, तो वह त्यागी नहीं। वैभवों के आधार पर न स्थिति रखों, न सेवा रखो क्योंकि हम बेपर टू प्रिन्स है। बाबा ने हमें एकदम नया जन्म दिया, नया



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हमारे दो पंख हैं - उमंग और उल्लास

नुकसान करता है। जहाँ मैं है वहाँ निर्मानता आ नहीं सकती। वह नव-निर्माण का कार्य कर नहीं सकती। और जिनमें निर्मानता नहीं वे न तो दिलपसन्द रहते, न लोकपसन्द बन सकते और न ही उन्हें प्रभु पसन्द का सर्टिफिकेट मिलता। सच्चाई वाला प्रभु पसन्द है उसे प्रभु को दुआएँ एक को दस गुणा मिलती हैं। प्रभु से एक प्यार करे तो प्रभु 100 गुणा प्यार देता है। यह अनुभव प्रैक्टिकल होना चाहिए। बाकी कहाँ तक हर एक करता वह अपनी स्थिति को देखे कि मुझे उस पिता परमात्मा से एक का 10 गुणा, 100 गुणा रिटर्न मिलता है? संकल्प करूँ एक, रिटर्न मिले बाबा की मदद के अनेक। बाबा वक्त पर पेपर भी लेता लेकिन उनको यह अनुभव होगा कितने भी विघ्न क्यों न आएँ। स्थितियों के आएँ, बीमारियों के आएँ, लौकिक आएँ, अलौकिक आएँ या सेवाओं के, संस्कारों के आएँ। परंतु नहीं बाबा बैठा है वहाँ बाबा की अनेक

जन्म माना कि हमारा कुछ भी नहीं। यह स्मृति और फिर नष्टोमोहा की भी बहुत सुक्ष्म मॉडल है। कई बार हम दूसरों को तो ज्ञान देते कि हमें टेन्शन मुक्त रहना है लेकिन खुद टेन्शन वाले गृहस्थी बन जाते। कोई प्रॉब्लम है, कोई सेवा है, कोई कार्य है आप बाबा को मदद से उसे हल करो। लेकिन चिन्तित हो करके, डर करके उसका हल करने से हल नहीं होगा। तो सच्ची दिल वाले बाबा के बच्चों की किसी भी व्यक्त में, वस्तु व वैभव में, लौकिक व अलौकिक में, सेवाओं में... किसी में भी अटैचमेंट नहीं होगी। इन सबसे मुक्त होने का साधन है कि आप उड़ता पंखी बनकर रहो। सदा उड़ती कला को अपने सामने रखो। लेकिन उड़ती कला के लिए पंख चाहिए। पंखी उड़ता तभी है जब उसके दो पंख हों। तो हमारे भी दो पंख हैं - उमंग और उल्लास। उमंग उल्लास होगा तो इतना दिल, रुचि से बाबा की याद में उड़ते रहेंगे।



राजयोगिनी दादी जानकी जी किसी की कम्पलेंट न कर कम्पलीट बनें

ज्वालामुखी स्वरूप यानी ऐसी पॉवरफुल याद, योग और तपस्या हो। ऐसी स्थिति पॉवरफुल और शीतला स्वरूप के संतुलन वाली हो। इसके लिए धैर्यवत है तो शीतल है। बहुत अच्छा है, सब ठीक है... ऐसे करते, कहते आगे बढ़ते-बढ़ाते रहो। कोई भी अच्छी फीलिंग व खराब फीलिंग हो तो वो नजरों से पता चल जाता है। जिसके पास बाबा के लिए सच्ची दिल है और बाबा हमको जो बनाना चाहता है उसके बिगर और कोई तमन्ना नहीं है, और कोई इच्छा नहीं है तो बाबा की नजरों से निहाल हो जाएंगे। जो बाबा की नजरों से निहाल होने का अनुभव करता है वो कभी बेहाल नहीं होता है। तो हमारी भी स्थिति ऐसी हो जो हमारे सामने आए वो नजर से निहाल हो जाए। सबके दिल से शुक्रिया निकालें।

जो बात दिल को टच होती है, अच्छी हुई तो भूलेगी नहीं और बुरी हुई तो भूलेंगे नहीं, दिल ऐसी है। इसलिए दिल में कुछ बात रखो ही नहीं, नहीं तो फिर दिल बार-बार उधर जाती रहेगी। भले उसने मेरे साथ क्या भी किया हो, अपना पार्ट बनाया, मेरे लिए एक पेपर आया और उसमें बाबा ने पास होने की शक्ति दे दी है। इसके बजाए अन्दर अगर वैभव भाव हुआ तो भय जरूर होगा। पर जिसके अन्दर किसी भी आत्मा के प्रति जरा भी प्लान नहीं है तो वो अपने लिए सेफटी है। कई आत्माएँ ऐसी हैं जो थोड़ा वैभव का संस्कार होता है, समझो, किसी ने मेरे को किसके लिए भी इशारा दिया कि इनसे सम्भलना। तो फौरन जाके मैं उसी को बताती हूँ कि तेरे लिए फलाने ने मेरे को ऐसे कहा है... अब यह भी कोई बुद्धि है? उन्होंने तो अपनी शुभ भावना से प्यार के कारण सावधानी दी कि उसके संग में नहीं आना। लेकिन मैं जाकर उसको यह सब बातें बताऊँ कि उन्होंने आपके लिए यह इशारा दिया... तो कईयों की बुद्धि जो है वो अच्छी बात ग्रहण करने के बजाए ऐसी बातें ग्रहण करती हैं तो दूसरे को भी वही बात सुनाते हैं, यह बहुत ही नुकसानकारक बात है।

जब तक डायरेक्ट ईश्वर की शक्ति मुझ आत्मा में नहीं आई है तब तक मेरे विक्रम विनाश नहीं हुए हैं। तो मेरे किए हुए पाप जो हैं उसे बाबा के प्यार से, ध्यान से, योग से मैंने उसे नाश नहीं किया। दूसरा अभी भी चलते-फिरते ऐसे कर्म होते हैं, ऐसी वाणी निकलती है जो उसको यह पता ही नहीं चलता है कि यह भी कोई विक्रम हो रहे हैं। इसलिए बाबा रोज मुरली में समझाता है कि बच्चे कोई ऐसा गलत काम नहीं करो। कुछ भी कारण है, पर गलती तो मैंने की, शकल तो मैंने ऐसी बनाई, कम्पलेंट तो मैंने किसकी की...। कभी भी किसकी कम्पलेंट मन में रखना, मुख से बोलना माना यह भी दिखाया कि मैं क्या हूँ और मेरे अन्दर क्या है, वो खुद अपने मुख से बता दिया। जो जरा-सा भी औरों की फीलिंग ले करके बाबा को सुनाता तो बाबा क्या करेगा? बाबा तो यही कहता है बच्ची तुम स्व को देखो। और जिन भी आत्माओं से कनेक्शन है उसकी अच्छाई को देखो, तो तुम अच्छी बन जाएगी। मैंने अगर उसकी अच्छाई को न देखा तो मैं कभी अच्छी नहीं बनेगी, यह पक्का समझ जाओ।

अन्दर से अपने को समझ करके, सीखा करके सुधार कर लो तो वो भी सब देखेंगे और कहेंगे वंडर है, इसने पुरुषार्थ किया है, मैंने बहुत चेज देखी है। अब मुझे भी ऐसा होना है। तो किसका कुछ भी छिपता नहीं है।